الطهارة والصلاة – اللغة الهندية

पाकी और नमाज़

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالزلفي

الطهارة والصلاة – اللغة الهندية

إعداد وترجمة : المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الأولى : ٦ / ١٤٣٩

ح) المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي ، ١٤٣٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي
الطهارة والصلاة – الهندية. / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالزلفي . - الزلفي ، ١٤٣٩ هـ

٤٤ ص ؛.. سم

ردمك: ١-٩٩-٨٠١٣-٦٠٣-٩٧٨

١ – الطهارة (فقه إسلامي) ٢ – الصلاة أ.العنوان

ديوي ٢٥٢ ١٤٣٩ / ٥٥٤٤

رقم الإيداع: ١٤٣٩ / ٥٥٤٤

ردمك: ١-٩٩-٨٠١٣-٦٠٣-٩٧٨

तहारत (पाकी) के आदेश

नापाकी का बयान

हिस्सी नजासत (गन्दगी) इस नजासत को साफ़ करना और शरीर के जिस अंग में लग जाए, उसका धुलना ज़रूरी है। यदि कपड़े या शरीर में गन्दगी लग जाए तो उसे साफ़ करने के लिए धोना जरूरी है। यदि वह ऐसी गन्दगी हो जो दिखायी देती हो, जैसे हैज़ (मासिक स्राव) का खून तो यदि धोने के बाद भी निशान बाकी रह जाता है और खत्म नहीं हो पाता तो उसमें कोई हर्ज नहीं है।

लेकिन यदि गन्दगी ऐसी हो जो दिखायी न देती हो तो उसे एक बार धोना ही काफ़ी है।

ज़मीन में अगर गन्दगी लग गयी है तो उसपर पानी बहा देने से वह पाक हो जाऐगी। इसी तरह से यदि गन्दगी तरल पदार्थ हो, तो सूख जाने से ही पाक हो जाती है। लेकिन यदि गन्दगी ठोस हो तो उसको हटाने से ही वह पाक होगी।

पानी का इस्तेमाल पाकी हासिल करने और नजासत को दूर करने के लिए किया जाता है। मिसाल के तौर पर वर्षा का पानी और समुद्र आदि का पानी। उसी तरह इस्तेमाल किया हुआ पानी भी इस्तेमाल किया जा सकता है। शर्त यह है कि पानी का रंग, गंध आदि न बदला हो।

उसी तरह से उस पानी का भी प्रयोग किया जा सकता है जिसमें कोई पाक चीज़ मिलायी गयी हो या मिल गयी हो। शर्त यह है कि वह पानी ही समझा जाए। अगर पानी में कोई पाक चीज़ मिलायी गयी हो और उसका नाम बदल गया हो, तो पाक होने के लिए उसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

उसी तरह से उस पानी का इस्तेमाल भी ठीक नहीं है जिसमें निजासत और गन्दगी मिल गयी हो और उससे पानी का स्वाद, सुगंध या रंग बदल गया हो। लेकिन अगर इन चीज़ों में से कोई चीज़ नहीं बदली है तो सहीतरीन क़ौल के मुताबिक़ उस पानी का इस्तेमाल जाएज़ है।

पानी पीने के बाद जो पानी बच जाता है उसका इस्तेमाल जायज़ है। अलबत्ता कुत्ता या सुव्वर का जूठा पानी इस्तेमाल करना जायज़ नहीं है। क्योंकि वह नापाक हैं।

नजासत की क़िस्में

शरीर से निकलने वाली कुछ निजासतें निम्नलिखित हैं

1. पेशाब और पाखाना

2. वदी . यह एक सफेद, गाढ़ा और गदला क़िस्म का पानी है, जो पेशाब के बाद निकलता है।

3. मज़ी . यह सफ़ेद, चिपचिपा पतला पानी है जो कम इच्छाओं के समय निकलता है।

4. मणी . यह पाक है, लेकिन यह तरल अवस्था मे है तो उसका धुलना और सूख गया हो तो खुरचना मुस्तहब है।

5. जानवरों का पेशाब और गोबर, अलबत्ता माकूलुल लहम (जिनका गोश्त खाया जाता है) जानवरों का पेशाब और गोबर पाक है।

6. हैज़ और नफ़ास

उपरोक्त सभी नजासतों को धोना और शरीर और कपड़ों में लगी हुई नजासत को दूर करना ज़रूरी है।

यदि कपड़े में मज़ी लग जाए तो केवल छींट मारना ही काफी है।

नजासत के तअल्लुक़ से कुछ अहकामात

1. यदि इंसान को कुछ ऐसा लग जाए जिसके बारे में उसे न मालूम हो कि यह पाक है या नापाक? तो बेहतर है उसे धोले,

2. अगर इंसान नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ होता है और अपने बदन पर गन्दगी देखता है, जिसे वह नहीं जानता था या जानता तो था मगर भूल गया था तो वाज़ेहतरीन क़ौल के मुताबिक उसकी नमाज़ सही होगी।

3. जिस व्यक्ति के कपड़ा आदि में नजासत की जगह छुपी रह जाए तो उसपर ज़रूरी है कि वह ढूंढ़े और उस जगह को धोये जिसके बारे में उसका गुमान है कि यहीं नजासत रही होगी। उसका कारण यह है कि नजासत का इसी से पता है कि कोई ठोस चीज़ लगी हो, या उसका रंग बदल गया हो, गंध आ गयी हो। लेकिन यदि ऐसा

पता नहीं चलता कि किस जगह नजासत लगी है तो पूरा कपड़ा धोना होगा।

शौच की आवश्यक्ता

शौच जाते समय इन बातों का ख़्याल रखना चाहिए।

1. शौचालय में प्रवेश करते समय पहले बायां पैर अन्दर रखें और ये दुआ पढ़ें: **बिस्मील्लाह अल्लाहुम्म इन्नी अउजुबिक मिनलखुब्सी वलखबाइस**, यानी, ''ऐ मेरे अल्लाह! मैं ख़बीस जिन्नातों और ख़बीस चूड़ैलों से तेरी पनाह मांगता हूं

और शौचालय से निकलते समय ''**गुफरानक**'' कहते हुये पहले दायां पैर बाहर निकालें।

2. अपने साथ कोई ऐसी चीज़ न ले जाएं जिसमें अल्लाह के नाम का उल्लेख हो। केवल उस स्थिति में ले जा सकते हैं यदि उसके खो जाने का भय हो।

3. खुले में शौच करते समय इस बात का ख्याल रखें कि क़िब्ले का रुख़ न हो और उसकी ओर पीठ करके भी न बैठें। अलबत्ता पाखाना में किब्ला की ओर पीठ करके बैठने की इजाज़त है,

4. लोगों से शर्मगाह को ढकना और उसमें कोताही न बरतना। मर्द के लिए छुपाने की जगह घुटना से लेकर ढोरी (नाफ़) तक है जबकि औरत सरापा छुपाने का सामान है

5. शरीर में पेशाब या पाखाना लगने से बचना चाहिए।

6. शौच के बाद पानी, या पत्थर आदि से सफ़ाई कर लेनी चाहिए। सफ़ाई के लिए बायें हाथ का इस्तेमाल करना चाहिए

वुजू का बयान

वुजू के बिना नमाज़ कुबूल नहीं होती है। अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

لاَ يَقْبَلُ اللهُ صَلاَةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ»

'जब तुम में से कोई बेवुजू हो जाता है तो अल्लाह तआला उस की नमाज़ उस वक्त तक कुबूल नहीं करता जब तक दोबारा वुजू न कर ले (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 6954 मुस्लिम 225)

वुजू की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है। इंसान को चाहिए कि उन्हें समझे। उन्हीं फ़ज़ीलतों में से एक फ़ज़ीलत इस हदीस में आयी है जिसे उस्मान बिन अफ़्फ़ान रजियल्लाहु अन्हु ने उल्लेख किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ، حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِهِ

''जो व्यक्ति अच्छी तरह वुजू करता है तो उसके गुनाह उसके शरीर से निकल जाते हैं, यहां तक कि उसके नाखून के नीचे से भी निकल जाते हैं (सही मुस्लिम 245)

उस्मान रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ أَتَمَّ الْوُضُوءَ كَمَا أَمَرَهُ اللهُ تَعَالَى، فَالصَّلَوَاتُ الْمَكْتُوبَاتُ كَفَّارَاتٌ لِمَا بَيْنَهُنَّ

''अल्लाह ने जिस तरह से आदेश दिया है यदि कोई उस तरह से वुज़ू करता है तो फ़र्ज़ नमाज़ें अपने बीच के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होंगी, (सही मुस्लिम 231)

वुज़ू का तरीका

1. इंसान अपने दिल से वुज़ू की नीयत करे। नीयत के शब्द ज़बान से अदा न करे। नीयत दिल के इरादे को कहते हैं। उसके बाद **बिस्मिल्लाह** कहे।

2. फिर तीन बार अपनी हथेलियों को धोए।

3. उसके बाद कुल्ली करे और तीन बार नाक में पानी चढ़ाए।

4. फिर चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक और लम्बाई में बाल उगने की जगह से ठूरी के नीचे तक धुले।

5. उसके बाद तीन बार अपने हाथों की उंगलियों के सिरे से कोहनी समेत धोये पहले दाया हाथ और फिर बायां हाथ धोये,

6. फिर एक बार अपने सिर का मसह करे। इंसान अपना हाथ भिगोए और अपने हाथ को सिर के शुरु हिस्से से अखीर तक ले जाए और फिर शुरु सिर पर वापस लाए।

7. फिर अपने दोनों कानों का एक बार मसह करे। अपनी उंगुली को कान के अन्दर डाले और अंगूठे से कान के ऊपरी हिस्से का मसह करे।

8. उसके बाद तीन बार अपने पांव को उंगुलियों के सिरे से टखनों समेत धोये। पहले दायां पांव धोये फिर बायां पांव धोये।

9. उसके बाद यह दुआ पढ़नी मुस्तहब है। ''**अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुह**,

उमर बिन ख़त्ताब रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبْلِغُ – أَوْ فَيُسْبِغُ – الْوَضُوءَ ثُمَّ يَقُولُ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ

''जो कोई इंसान अच्छी तरह वुजू करता है और फिर यह दुआ पढ़ता है, ''**अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अन्न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुहू** तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। जिस दरवाज़े से चाहेगा वह दाखिल होगा (सही मुस्लिम 234)

मोज़े पर मसह

इस्लाम के आसान दीन होने की एक दलील यह है कि उसने मोज़े पर मसह करने को जायज़ क़रार दिया है। और यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है।

अम्र बिन उमैय्या रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ عَلَى عِمَامَتِهِ وَخُفَّيْهِ

''मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पगड़ियों और मोज़ों पर मसह करते देखा, (सही बुख़ारी 205) मुगीरा बिन शोअबा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते है कि

بَيْنَا أَنَا مَعَ رَسُولِ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِذْ نَزَلَ فَقَضَى حَاجَتَهُ، ثُمَّ جَاءَ فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ مِنْ إِدَاوَةٍ كَانَتْ مَعِي، فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ»

एक रात मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि आप उतरे और शौच के लिए गये। फिर आप आए तो मैं ने अपने साथ मौजूद बालटी से पानी उंडेला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुजू किया और अपने दोनों मोज़ों पर मसह किया, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुख़ारी 203, मुस्लिम 274)

अलबत्ता मोज़ों पर मसह के लिए शर्त यह है कि इंसान ने पाकी यानी वुजू की हालत में मोज़े पहने हों। मसह की कैफ़ियत यह होगी कि भीगे हुए हाथों को ज़ाहिरी तौर पर फेरा जाए। मोज़ों के भीतरी हिस्सों पर मसह नहीं किया जायेगा

मसह की अवधि मुक़ीम के लिए एक दिन और एक रात है। और मुसाफ़िर (यात्री) किसी ऐसी यात्रा पर हो कि उसके लिए नमाज क़सर करना जायज़ हो तो उसके लिए मसह की अवधि तीन दिन और तीन रात है। मसह की अवधि समाप्त हो जाने या मसह के बाद मोज़ा उतार लेने, या नापाक होने की स्थिति में मसह बातिल हो जायेगा। क्योंकि उस वक्त नहाना ज़रूरी हो जाता है।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें

1. शरीर से किसी प्रकार का विकार बाहर आने की स्थिति में वुज़ू टूट जाता है। जैसे पेशाब, पाखाना, हवा, मणि, मज़ी, वदी अथवा खून आदि।

2. नींद यानी सो जाना

3. ऊंट का गोश्त खाना

4. बेहोश हो जाना या होश खो देना

स्नान या नहाना

पाकी की नीयत से पूरे शरीर पर पानी डालने को स्नान कहते हैं। उसके सही होने के लिए ज़रूरी है कि पूरे शरीर को धोया जाए। साथ ही कुल्ली की जाए और नाक में पानी चढ़ाया जाए। पांच कारणों से नहाना अनिवार्य हो जाता है।

1. जागी हुई हालत में या नींद की हालत में या संभोग करते समय तीव्रता के साथ मणि का ख़ारिज होना। यदि मणि बिना संभोग के, किसी बीमारी के कारण या अधिक ठंडक के कारण निकल जाए तो ऐसी हालत में स्नान वाजिब यानी अनिवार्य नहीं होगा। यदि कोई व्यक्ति अपनी मणि या उसका निशान देखले तो उसपर स्नान वाजिब होगा, चाहे उसे याद हो या न हो।

2. स्त्री और पुरुष के जनांगों का मिलन यानी यदि पुरुष का लिंग स्त्री के शर्मगाह में दाखिल हो जाए तो फाल हो या न हो स्नान ज़रूरी हो जाएगा।

3. स्त्रियों की माहवारी के समाप्त होने पर।

4. मृत्यू के बाद मय्यत को स्नान कराना ज़रूरी है।

5. काफ़िर जब इस्लाम में दाखिल होगा तो उसपर स्नान वाजिब हो जायेगा।

नापाक होने के बाद कौन कौन सी चीजें हराम हैं

स्त्री और पुरुष जब संभोग की क्रिया से गुज़रें, चाहे मणि बाहर निकले या न निकले, तो उसमें से हर एक को जुन्बी कहेंगे। और उन पर निम्नलिखित चीज़ें हराम हैं

1. नमाज़ पढ़ना।

2. तवाफ़ करना।

3. कुरआन पाक की तिलावत करना, या उसे छूना।

4. मस्जिद में ठहरना। मस्जिद से गुज़रने में कोई हर्ज नहीं है। अलबत्ता ज़रूरी हो तो मस्जिद में ठहरना भी जायज़ है। और वुज़ू के द्वारा नापाकी को हलका किया जा सकता है।

तयम्मुम

सफ़र में या हज़र में दानों जगहों पर तयम्मुम जायज़ है। शर्त यह है कि निम्नलिखित वजह हो, तो वुज़ू और स्नान दोनों के लिए तयम्मुम जायज़ है।

1. जब पानी न मिले, या पानी मिले मगर इतना कम हो कि वह पाकी हासिल करने के लिए काफ़ी न हो। अलबत्ता पहले पानी तलाश करे। उसके बाद भी पानी न मिले तो

वह तयम्मुम करेगा या पानी तो उसके पास हो, या पानी के पास पहुंच सकता हो मगर उसे भय हो कि उसकी जान य माल को उससे नुक़सान पहुंच सकता है।

2. यदि शरीर के कुछ हिस्सों में घाव हो और पानी लग जाने से नुक़सान की आषंका हो तो उस पर एक बार मसह कर ले। अपने हाथ को भिगा ले और उस हिस्से पर फेर ले। यदि मसह से भी नुक़सान की आषंका हो तो अन्य अंगो को धो ले मगर उस अंग का तयम्मुम करेगा।

3. यदि पानी या मौसम बहुत ठंडा हो और पानी के इस्तेमाल से बीमारी का भय हो।

4. उसके पास पानी मौजूद हो, लेकिन उसे पीने या खाना बनाने की ज़रूरत हो तो ऐसी सूरत में तयम्मुम करेगा।

तयम्मुम का तरीक़ा

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि इंसान अपने दिल से नीयत करे और अपने दोनों हथेलियों से एक बार ज़मीन पर मारे। उसके बाद अपने चेहरे पर मसह करे और फिर अपने बायें हाथ की हथेली के अन्दुरूनी हिस्से को दाहिने हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे। और फिर दाहिनी हथेली के अन्दुरूनी हिस्से को बायें हाथ के ऊपरी हिस्से पर फेरे।

तयम्मुम भी उन चीज़ों से टूट जाता है जिन से वज़ू टूट जाता है। उसी तरह जिसके पास पानी न रहा हो, उसे नमाज़ से पहले पानी मिल जाए, या नमाज़ के बीच पानी उपलब्ध हो जाए तो तयम्मुम टूट जायेगा।

यदि नमाज़ पढ़ लेने के बाद पानी मिले तो उसकी नमाज़ सही हो जायेगी और उसका दोहराना ज़रूरी नहीं होगा।

माहवारी और नफ़ास

प्रत्येक स्वस्थ नारी को प्रत्येक माह कुछ निष्चित दिनों के लिए रक्तस्राव होता है जिसे माहवारी कहते हैं। उसी तरह बच्चे को जन्म देने के बाद कुछ दिनों तक रक्तस्राव जारी रहता है उसे नफ़ास कहते हैं।

ऐसी महिलाओं के लिए जो माहवारी के दिनों में या नफ़ास की हालत में हों नमाज़ पढ़ना या रोज़ा रखना जायज़ नहीं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

إِذَا أَقْبَلَتِ الحَيْضَةُ، فَدَعِي الصَّلاَةَ، وَإِذَا أَدْبَرَتْ، فَاغْسِلِي عَنْكِ الدَّمَ وَصَلِّي

''जब माहवारी शुरु हो जाए तो नमाज़ पढ़ना छोड़ दे और जब माहवारी आना बन्द हो जाए तो अपना खून धो ले और नमाज़ पढ़े (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 331, मुस्लिम 333)

इस अवधि में जो नमाज़ें छूट जायेंगी उनका क़ज़ा करना ज़रूरी नहीं है। अलबत्ता जितने रोज़े छूटे हों, उनकी क़ज़ा करनी होगी। उसी तरह माहवारी की हालत में खानए काबा का तवाफ़ करना भी जायज़ नहीं है। और माहवारी के दिनों में पति पर हराम है कि वह अपनी पत्नी के साथ संभोग करे।

रक्तस्राव बन्द होते ही औरत पाक हो जायेगी। इस अवसर पर उसके लिए नहाना अनिवार्य है। और अब उसके लिए जो चीज़ें हराम थीं, व हलाल हो जायेंगी।

यदि नमाज़ का समय हो गया और फिर उसकी माहवारी शुरु हुई तो सही क़ौल के अनुसार वह पाकी के बाद उस नमाज़ की क़ज़ा करेगी।

उसी तरह यदि औरत नमाज़ निकलने से (एक रकाअत पढ़ने में जितना समय लगता है), से पहले भी पाक हो जायेगी तो उसको नमाज़ पढ़नी होगी। और मुस्तहब है कि जो नमाज़ जिसके साथ जमा की जाती है, उसकी भी क़ज़ा करे।

मिसाल के तौर पर यदि सूरज डूबने से पहले पाक होती है तो उसे अस्र की नमाज़ भी पढ़नी होगी और ज़ोहर की नमाज़ की क़ज़ा मुस्तहब होगी। इसी तरह अगर आधी रात से पहले पाक होगी तो वह इशा की नमाज़ पढ़ेगी और उसके हक़ में मुस्तहब है कि वह मग़रिब की नमाज़ क़ज़ा करे।

नमाज़ के अहकाम

नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुक्न है। यह हर व्यस्क (बालिग) और समझदार मुसलमान पर वाजिब है। आदमी पन्द्रह साल की आयु को पहुंचने पर व्यस्क (बालिग) हो जाता है। उसके नाफ़ के नीचे बाल उग आते हैं। और मणि ख़ारिज होने लगती है। महिलाओं के लिए एक शर्त यह भी है कि उसकी माहवारी स्राव शुरु हो जाता है। यदि

किसी को इन तीनों में से कोई एक चीज़ भी हासिल हो गयी तो वह व्यस्क हो गया।

नमाज़ की अनिवार्यता को नकारने वाला व्यक्ति इजमा की नज़र में काफिर होगा। सुस्ती और काहिली से नमाज़ छोड़ने वाले इंसान के काफ़िर होने के बारे में सहाबियों का इजमा है।

क़ियामत के दिन नमाज़ का ही सबसे पहले हिसाब लिया जायेगा। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا [النساء:١٠٣]

''नमाज़ मोमिनों पर वाजिब की गयी है तय वक्त पर (सूरह निसा, आयत 103)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ "

''इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देना, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना, और रमज़ान के राज़े रखना। (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 8, मुस्लिम 16)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हूए सुनाः **إِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكَ الصَّلَاةِ**

''मुसलमान और कुफ्र व शिर्क के बीच की सीमा (रेखा) नमाज़ है। (सही मुस्लिम 82)

नमाज़ अदा करने के बेशुमार फ़ज़ाएल हैं। उन्हीं में एक फ़जीलत यह है जिसे अबु हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ، ثُمَّ مَشَى إِلَى بَيْتٍ مَنْ بُيُوتِ الله لِيَقْضِيَ فَرِيضَةً مِنْ فَرَائِضِ الله، كَانَتْ خَطْوَتَاهُ إِحْدَاهُمَا تَحُطُّ خَطِيئَةً، وَالْأُخْرَى تَرْفَعُ دَرَجَةً»

'जिसने अपने घर में वुजू किया और किसी मस्जिद की तरफ़ गया ताकि अल्लाह के फ़र्ज़ों में से एक फ़र्ज़ नमाज़ को अदा करे तो उसके एक क़दम की वजह से गुनाह ख़त्म होंगे और दूसरे की वजह से उसका दर्जा बुलन्द होगा, (सही मुस्लिम 666)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللهُ بِهِ الْخَطَايَا، وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ؟» قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ الله قَالَ: «إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ، وَكَثْرَةُ الْخُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذَلِكُمُ الرِّبَاطُ

''क्या मैं तुम लोगों को ऐसी चीज़ न बता दूं जिसकी वजह से अल्लाह तआला गुनाहों को मिटा देगा और दरजात को बुलन्द फ़रमा देगा सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने कहा कि अल्लाह के रसूल! ज़रूर बताइये! आपने फ़रमाया ''नापसंदीदगी के बावजूद पूरी तरह वुजू करना, मस्जिदों

की तरफ़ ज़्यादा जाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, यह सीमा पर रखवाली करने के समान है, (सही मुस्लिम 666)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ، أَوْ رَاحَ، أَعَدَّ اللهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ نُزُلًا، كُلَّمَا غَدَا، أَوْ رَاحَ

''जो सुबह और शाम मस्जिद जाता है तो जितनी बार सुबह व शाम को वह जाता है, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मेहमाननवाज़ी तैयार करता है (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 662, मुस्लिम 669)

नमाज़ से संबंधित अहम अहकाम

1. मर्दों के लिए मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है। हदीस में आया है 'आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया,

لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِالصَّلاَةِ فَتُقَامَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى مَنَازِلِ قَوْمٍ لاَ يَشْهَدُونَ الصَّلاَةَ، فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ

मैंने इरादा किया है कि मैं आदेश दूं कि नमाज़ क़ायम की जाए और मैं उन लोगों के घरों की तरफ जाऊं जो हमारे साथ नमाज़ में शरीक नहीं होते और उन्हें आग लगा दूं (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 2420, मुस्लिम 651)

2. मुसलमान को चाहिए कि वह मस्जिद में पूरे सम्मान और इत्मिनान के साथ तशरीफ़ लाए।

3. मस्जिद में दाखिल होने वाले व्यक्ति के लिए सुन्नत है कि वह पहले दायां पांव अन्दर करे और यह दुआ पढ़े **''अल्लाहुम्मफ्तह–ली अबवाब रहमतिक**, यानी, ''ऐ मेरे अल्लाह! तू मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़ों को खोल दे (सही मुस्लिम 1252)

1. सुन्नत है कि इंसान मस्जिद में बैठने से पहले दो रकअत तहैयतुल मस्जिद अदा करे। हजरत अबु क़तादा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ

''जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो उसे चाहिए कि बैठने से पहले दो रकआत अदा करे (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 444, मुस्लिम 714)

5. नमाज़ में शर्मगाह का ढकना ज़रूरी है। मर्द की शर्मगाह नाफ़ से घुटना के बीच का हिस्सा है जबकि औरत सरापा छुपाने का सामान है। नमाज़ में चेहरे के सिवा

6. क़िब्ला का रुख़ करना ज़रूरी है और यह दो हालतों के सिवा नमाज़ के कुबूल होने की शर्त है। पहली हालत यह है कि कोई रुकावट हो जैसे बीमारी आदि। और दूसरी यह कि इंसान सफ़र कर रहा हो। यह हालत नफ़िल नमाज़ों के साथ खास है। इसमें फ़र्ज़ नमाज़ शामिल नहीं है।

7. नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना ज़रूरी है। वक़्त से पहले नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी और वक़्त को टालना हराम है।

8. नमाज़ के लिए जल्दी जाना चाहिए और पहली पंक्ति में जगह पाने की कोशिश करनी चाहिए और नमाज़ का इन्तिज़ार करना चाहिए। क्योंकि इसमें बड़ी फ़ज़ीलत है। अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الأَوَّلِ، ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لاَسْتَهَمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لاَسْتَبَقُوا إِلَيْهِ

''यदि लोगों को मालूम हो जाए कि अज़ान और पहली पंक्ति में कितनी फ़ज़ीलत है तो उन्हें कुरआअन्दाज़ी के बिना उनमें अवसर न मिल सके तो लोगकुरआअन्दाज़ी भी करेंगे और लोगों को नमाज़ों के लिए जल्दी आने की फ़ज़ीलत मालूम हो जाए तो उसके लिए सबक़त करें (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 615, मुस्लिम–437)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لاَ يَزَالُ أَحَدُكُمْ فِي صَلاَةٍ مَا دَامَتِ الصَّلاَةُ تَحْبِسُهُ

''इंसान उस वक़्त तक नमाज़ में होता है जब तक कि नमाज़ उसे रोके रखती है। (मुत्तफ़क़ अलैह बुख़ारी 659, मुस्लिम 649)

नमाज़ का समय

1. जुहर का समय सूरज ढलने से लेकर साया की लम्बाई उस चीज़ के बराबर होने तक होता है।

2. अस्र का समय साया की लम्बाई उस चीज़ के बराबर होने से लेकर सूरज डूबने (सुर्यास्त) तक रहता है।

3. मग़रिब की नमाज़ का समय सूरज डूबने से लेकर पष्चिम की लाली समाप्त होने तक होता है।

4. इशा की नमाज़ का समय पष्चिम की लाली समाप्त होने से लेकर आधी रात तक होता है।

5. फ़ज्र की नमाज़ का समय तुलूए फ़ज्र से लेकर सूरज उगने तक रहता है।

ऐसी जगहें जहां नमाज़ सही नहीं होतीं

कब्रिस्तान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः الْأَرْضُ كُلُّهَا مَسْجِدٌ إِلَّا الْحَمَّامَ وَالْمَقْبَرَةَ

‘‘पूरी ज़मीन मस्जिद (सज्दा करने की जगह) है, सिवाए हम्माम और क़ब्रिस्तान के। इसे इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबु दाऊद, तिर्मिज़ी और इमाम नसायी ने रिवायत किया है अलबत्ता क़ब्रिस्तान में जनाज़े की नमाज़ जायज़ है।

2. क़ब्र की ओर रुख़ करके नमाज़ पढ़ना अबू मर्सद गनवी रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना

لَا تُصَلُّوا إِلَى الْقُبُورِ، وَلَا تَجْلِسُوا عَلَيْهَا

''क़ब्रों का रुख़ करके नमाज़ न पढ़ो और न ही उन पर बैठा करो, (सही मुस्लिम 973)

3. ऊंट का बाड़ा, वह जगहें जहां ऊंट रहते है। इसी तरह नापाक जगहों में नमाज़ नहीं होती है।

नमाज़ की कैफ़ियत

तमाम इबादतों की तरह नमाज़ के वक़्त भी नीयत का होना ज़रूरी है। नीयत दिल से, ज़बान से अदा किये बिना करनी चाहिए। नमाज़ की कैफ़ियत निम्नलिखित हैः

1. नमाज़ी पूरी तरह क़िब्ला की ओर खड़ा हो, टेढ़ा तिरछा होकर खड़ा होना ग़लत है।

2. फिर तकबीर यानी **अल्लाहु अकबर** कहे और तकबीर के समय अपने दोनों हाथों को दोनों मोंढ़ों या दोनों कानों तक उठाए।

3. फिर अपनी दाहिनी हथेली को बायीं हथेली पर रखकर सीने पर रखे।

3. फिर सना पढ़ेः الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ ''**अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यबन मुबारकन फीहि** (सही मुस्लिम 600)

या यह पढेः سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرَكَ

सुबहानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व ला इलाह गैरुक, (सुनन अबू दाऊद 775, सुनन तिर्मिजी 242) इसे शैख़ अलबानी ने सही क़रार दिया है।

या इसके सिवा कोई दूसरी दुआ–ए–इस्तफ़ताह पढ़े। बेहतर तो यह है कि यह दुआ बदलबदल कर पढ़े। एक ही दुआ को न पढ़े। क्योंकि इस से खुशू व खूजू की कैफ़ियत पैदा होगी।

5. उसके बाद तऊज़ यानी أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ''**अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम,** पढ़े।

इसके बाद بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ "**बिस्मिल्लाहि र्रहमानिर्रहीम** पढ़े

और फिर सूरह फ़ातिहा की तिलावत करे,

الحَمْدُ لله رَبِّ العَالَمِينَ * الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ * مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ * إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ * اهْدِنَا الصِّرَاطَ المُسْتَقِيمَ * صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ المَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

2. अलहमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर्रहमानिर्रहीम, मालिकियौमिद्दीन, इय्याक नाबुदु वइय्याक नसतईन, इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम, सिरातल्लजीन अनअमतअलैहिम, गैरिलमगजूबिअलैहिम वलज्ज़ाल्लीन,, आमीन,,

7. उसके बाद जितना हो सके, कुरआन की तिलावत करे

8. फिर रुकूअ करे और रुकूअ के समय अपने हाथों को कंधों तक उठाए और अल्लाहु अकबर कहे। रुकूअ के दौरान अपने हाथों को घुटनों पर रखे। इस दौरान उंगुलियां फैली हुई हों और यह दुआ पढ़नी चाहिए ''**सुब्हान रब्बियल अज़ीम** ﴾ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

सुन्नत यह है कि उसको तीन बार पढ़ा जाए उससे ज़्यादा बार भी पढ़ना जायज़ है और यदि एक बार भी पढ़ते हैं तो भी काफ़ी होगा।

9. फिर इमाम और मुन्फरीद में से हर कोई ''समीअल्ला हुलिमन हमिदह कहते हुए रुकूअ से अपना सिर उठाए और रुकूअ से उठने के दौरान दोनों हाथों को मोंढों तक उठाए। मुक़्तदी और मुन्फ़रिद (यानी अकेले नमाज पढने वाला) ''रब्बना व लकल हम्द कहेंगे, और अपने दायें हाथ की हथेली को बायें हाथ की हथेली पर रखकर सीने पर रख लेंगे।

10. रुकूअ से उठने के बाद क़ियाम के दौरान ये दुआ पढ़ेंगे।

اللهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، مِلْءُ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءُ الْأَرْضِ، وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ

''**अल्लाहुम्म रब्बना लकल हम्दु मिल्अस्समावाति व मिल्अल अरजि व मिल्अ मा बैनहुमा व मिल्अ मा शीइत मिन शैयइन बादु**, (सही मुस्लिम 771)

11.फिर पहला सजदा करे और सजदे में जाते समय अल्लाहु अकबर कहे और अपनी सात हड्डियों यानी पेशानी के साथ नाक, दोनों हथेलियों, दोनों घुटनों और दोनों पांवों के किनारों पर सजदा करे। इस बीच अपने बाजू को बग़ल

से दूर रखे और अपने पांवों की उंगुलियों के सिरों को क़िब्ला रुख़ करे और सजदा में यह दुआ पढ़े

"सुब्हान रब्बियल आला, سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

इस बारे में सुन्नत है कि उसे तीन बार पढ़ा जाए, तीन बार से ज़्यादा पढ़ना भी जायज़ है। अलबत्ता एक बार पढ़ना काफ़ी होगा और सजदा के दौरान ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करना मुस्तहब है, क्योंकि यह उन जगहों में से है जहां दुआ को क़ुबूल किया जाता है।

12.फिर इंसान अल्लाहु अकबर' कहते हुए सजदा से अपना सिर उठाए और दोनों सजदों के बीच अपने बायां पांव पर बैठे और दाहिने पांव को खड़ा रखे और अपने दाहिने हाथ को दाहिने रान के किनारे यानी घुटने से करीब रखे और बायें हाथ को बायें रान के किनारे यानी घुटने से क़रीब रखे और उसके हाथों की उंगुलियां फैली हुई हों और उस जलसे में यह दुआ पढ़े।

रब्बिग़ फिरली, रब्बिग़ फिरली, رب اغفرلي . رب اغفرلي

13.फिर दूसरा सजदा करे और उसमें उन्हीं चीज़ों को अंजाम दे जो उसने पहले सजदा में अंजाम दिया था।

14.फिर दूसरे सजदे से अल्लाहु अकबर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए।

15.दूसरी रकअत में दुआए इस्तिफताह और तऊज़ के सिवा, दूसरे सभी कथनी और करनी को अंजाम देगा जो

उसने पहली रकअत में किया है, अलबत्ता इस रकअत के दूसरे सजदा के बाद उसी तरह बैठेगा जिस तरह दोनों सजदों के बीच बैठता है लेकिन यहां दाहिने हाथ की उंगुलियों को समेट लेगा और अंगूठे को बिचली उंगली के साथ जोड़ देगा और शहादत की उंगुली से इशारा करेगा और उस जुलूस में तशह्हुद पढ़ेगा। तशह्हुद की दुआ यह है

التَّحِيَّاتُ للهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ، فَإِنَّكُمْ إِذَا قُلْتُمُوهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ للهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

''अत्तहिय्यातु लिल्लाहि, वस्सलवातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यू व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह, (सही बुख़ारी 831)

इसके सिवा तशहहुद के दूसरे वाक्य भी आए हैं।

यदि तीन या चार रकअत वाली नमाज़ पढ़ रहा हो जैसे मग़रिब, ज़ोहर, अस्र या इशा तो उसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए और क़ियाम के समय अपने हाथ को अपने मोंढ़ों तक उठाते हुए खड़ा होगा और बाक़ी नमाज़ को दूसरी रकअत की तरह से पूरा करेगा। अलबत्ता क़ियाम में केवल सूरह फ़ातिहा पढ़ेगा।

आख़िरी रकअत में दूसरे सजदा के बाद बैठेगा, तशह्हुद के बाद दरूद इब्राहीमी पढ़ेगा।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन, व अला आलि मुहम्मदिन, कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद,

इस दुआ को पढ़ने के बाद जितना चाहे दुआ करे। सुन्नत यह है कि इंसान ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करे और यह दुआ भी पढ़े।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، و مِنْ عَذَابِ النار ومِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا والممات وَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन अज़ाबिल क़बरि, वमिन अजाबिन्नार व मिन फितनतिल मह्या वल ममाति व मिन फितनतिल मसीहिद्दज्जाल**

16. उसके बाद दायीं ओर **"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह** कहते हुए सलाम फेर दे और फिर बायीं ओर भी उसी तरह से करे,

17. जोहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ों में नमाज़ी के लिए तवर्रुक करना मसनून है। उसकी कैफ़ियत यह होगी

कि इंसान अपना दाहिना पांव खड़ा कर दे और बायें पांव को अपनी पिंडली के नीचे से निकाले और अपना सुरीन ज़मीन पर रख दे। और पहले तशह्हुद में जिस तरह अपना हाथ रखा था, उसी तरह से रखे।

नमाज़ के बाद की दुआएं

أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ

اللهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ «يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

''असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम, व मिनकस्सलाम, तबारक्त या जल जलालि वल इकराम, (सही मुस्लिम 591)

''ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु लाशरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्म ला मानिअ लिमा आतैत, वला मुतिय लिमा मनअत, वला यनफउ ज़ल जद्दि मिनकलजद्द (मुत्तफ़क़ अलैह 844, 593)

“ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाहु, वला नाबुदु इल्ला इय्याहू, लहुननेमतु वलहुल फज़्लु, वलहुस्सनाउल हसन, ला इलाहा इल्लाहु मुख़लिसीना लहुद्दीन वलौ करिहल काफ़िरून (सही मुस्लिम 594)

इसके बाद 33बार **सुब्हानल्लाह**’ سُبْحَانَ الله, 33बार **अल्हम्दु लिल्लाह**’ الحَمْدُ لِلّٰه। और 33बार **अल्लाहु अकबर**’ اللّٰهُ أَكْبَرُ। पढ़े, और 100 पूरा करने के लिए यह दुआ पढ़ें: **“ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर,**

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِير

उसी तरह नमाज़ी को हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी, सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास पढ़ना चाहिए। इन तीनों सूरतों को फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ों के बाद तीन.तीन बार पढ़ना चाहिए।

मसबूक़ (जिसकी नमाज़ का कुछ हिस्सा छूट गया हो)

जिस की नमाज़ का कुछ हिस्सा छूट गया हो, जैसे एक रकअत या उससे ज़्यादा तो वह इमाम के साथ जितना न पढ़ सका हो, नमाज़ से दूसरा सलाम फेरने के बाद पूरा करेगा और मसबूक़ ने इमाम के साथ जिन रकअतों को पाया होगा, वह उसकी नमाज़ का शुरुआती हिस्सा समझा

जायेगा। लेकिन यदि किसी से रुकूअ छूट जाए तो पूरी रकअत छूटी हूई समझी जाएगी।

जब वह व्यक्ति जिसकी नमाज़ छूट रही हो मस्जिद में दाखिल होगा, तो नमाज़ी जिस हालत में भी हों, चाहे खड़े हों, रुकूअ में हों, सजदे में हों, या किसी दूसरी हालत में हों, वह उनके साथ उसी अवस्था में जमाअत में शामिल हो जायेगा। वह नमाज़ियों को अगली रकअत के लिए खड़ा होने का इन्तिजार नहीं करेगा। तकबीर तहरीमा खड़ा होकर ही कहेगा, अलबत्ता यदि वह असमर्थ है, जैसे बीमार आदि तो उसके लिए छूट है।

नमाज़ को बातिल कर देने वाली चीज़ें

1. जानबूझ कर बातें करना, चाहे कम ही क्यों न हों।
2. पूरे शरीर का क़िब्ला रुख से हट जाना।
3. वुज़ू को तोड़ने वाली किसी चीज़ का घटित हो जाना।
4. अकारण लगातार हरकत करना।
5. हंस देना, हंसी कम ही क्यों न हो।
6. जानबूझ कर नमाज़ में रुकुअ, सजदा, क़ियाम या कुऊद का इज़ाफ़ा करना।
7. जानबूझ कर इमाम से सबक़त करना।

जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं

1. तकबीर तहरीमा के सिवा अन्य तकबीरें,
2. रुकूअ में एक बार ''सुबहान रब्बियल अज़ीम पढ़ना।

3. रुकूअ से सिर उठाते समय इमाम का ''समीअल्लाहु लिमन हमिदह कहना। अकेले पढ़ रहा हो तो उसे भी कहना होगा।
4. रुकूअ से सिर उठाने के बाद ''रब्बना व लकल हम्द, पढ़ना
5. सजदा में एक बार ''सुबहान रब्बियल आला पढ़ना
6. दोनों सजदों के बीच रब्बिग़ फिरली कहना।
7. पहला तशह्हुद पढना
8. तशह्हुद के लिए बैठना।

नमाज़ के अरकान

1. फ़र्ज़ नमाज़ों में ताक़त हो तो खड़ा होना, नफ़्ल नमाज़ों में खड़ा होना वाजिब नहीं है, अलबत्ता बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले को खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने वाले की तुलना में आधा सवाब हासिल होगा,
2. तकबीर तहरीमा
3. हर रकअत में सूरह फ़ातिहा की तिलावत करना,
4. हर रकअत में रुकूअ करना,
5. रुकूअ से उठने के बाद सिधा खड़ा होना,
6. हर रकअत में दो बार सातों हड्डियों पर सजदा करना,
7. दोनों सजदों के बीच बैठना,
8. नमाज़ पढ़ते वक़्त सकून और इत्मिनान का ख्याल रखना,
9. आखिरी तशहहुद,
10. आखिरी तशहहुद के लिए बैठना,
11. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजना,
12. दोनों तरफ सलाम फेरना,
13. नमाज़ के अरकान के बीच तर्तीब का ख्याल रखना।

सहव का बयान

सहव भूलचूक को कहते हैं। यदि नमाज़ी नमाज़ में सहव का शिकार हो जाए या उससे नमाज़ में कमी हो जाए या कमी बेशी को लेकर सन्देह उत्पन्न हो जाए तो उसके लिए सजदए सहव करना होगा।

यदि नमाज़ में किसी चीज़ का इज़ाफ़ा हो जाए जैसे क़ियाम, रूकूअ या कुऊद आदि तो ऐसी स्थिति में सलाम के बाद सहव के दो सजदे करे।

यदि नमाज़ी से गलती से कोई कमी रह गयी हो, जैसे नमाज़ के किसी रुक्न का छूट जाना, या किसी चीज़ का पढ़ने से रह जाना, और बाद वाली रकअत के क़िरात शुरु करने से पहले वह याद आया हो तो नमाज़ी उसे दोहरा लेगा और छूटा हुआ रुक्न और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा। इसके अलावा सजदए–सहो भी करेगा। लेकिन यदि उसके बाद वाली रकअत की क़िरात शुरु करने के बाद याद आया हो तो जिस रकअत में रुक्न छूटा हो, वह बातिल हो जायेगी और उसके बाद वाली रकअत उसकी जगह ले लेगी।

यदि छूटे हुए रुक्न का ज्ञान सलाम फेरने के बाद हुआ और समय ज़्यादा नहीं बीता हो तो एक रकअत पूरा करेगा और सजदए सहव करेगा। लेकिन यदि समय ज़्यादा हो गया हो, या वुज़ू टूट गया हो तो नमाज़ को नये सिरे से पढ़ेगा,

यदि किसी वाजिब चीज को भूल गया हो जैसे तशह्हुद के लिए बैठना, या उसी की तरह नमाज़ की कोई दूसरी वाजिब चीज़, तो ऐसी स्थिति में सलाम से पहले दो सजदए सहव करेगा,

सन्देह की स्थिति में, यदि इंसान को रकअतों की संख्या के बारे में सन्देह हो, जैसे उसे सन्देह हो जाए कि उसने दो रकअतें पढ़ी हैं या तीन रकअतें पढ़ी हैं तो इस स्थिति में कम वाली संख्या को बुनियाद बनायेगा। क्यों कि उसकी नज़र में वह संख्या यक़ीनी है। और सलाम से पहले सजदए सहव करेगा,

यदि रुक्न के छूट जाने के सिलसिले में शक हो जाए तो उसे यह मान कर अदा करेगा मानो उसने उस रुक्न को छोड़ दिया है। अतएव वह उस अमल को और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा और सजदए–सहव करेगा।

यदि उसे शक होने लगे कि पता नहीं मैंने यह पढ़ा है कि नहीं, या यह किया है कि नहीं तो जिस तरफ उसका अधिक गुमान हो उसी के अनुसार अमल करेगा और सजदए सहव अंजाम देगा।

सुनन रवातिब

हर मुसलमान, मर्द और औरत के लिए मुक़ीम की हालत में बारह रकअतों का एहतमाम मुस्तहब है।

चार रकअत नमाज़े ज़ुहर से पहले, और दो रकअत नमाज़े ज़ुहर के बाद, दो रकअत मगरिब के बाद, दो रकअत इशा के बाद और दो रकअत फ़ज्र के पहले,

उम्मुल मोमेनीन उम्मे हबीबा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुनाः

مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لِلّٰهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا، غَيْرَ فَرِيضَةٍ، إِلَّا بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ، أَوْ إِلَّا بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ

''जो मुसलमान बन्दा अल्लाह के लिए हर दिन फर्ज़ के अलावा बारह रकअतें नफ़्ल पढ़ता है तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक घर का निर्माण करता है या उसके लिए जन्नत में एक घर बनाया जाता है, (सही मुस्लिम 728)

सभी रवातिब सुन्नतों और नफ़्ल नमाज़ों के ताल्लुक़ से अच्छा यही है कि उन्हें अपने घर में अदा किया जाए। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

إِذَا قَضَى أَحَدُكُمُ الصَّلَاةَ فِي مَسْجِدِهِ، فَلْيَجْعَلْ لِبَيْتِهِ نَصِيبًا مِنْ صَلَاتِهِ، فَإِنَّ اللهَ جَاعِلٌ فِي بَيْتِهِ مِنْ صَلَاتِهِ خَيْرًا

''जब तुम में से कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ों में से अपने घर का हिस्सा भी बनाये। क्योंकि अल्लाह तआला उसके अपने घर में नमाज़ अदा करने को खैर व बरकत का कारण बनाएगा, (सही मुस्लिम 778)

ज़ैद बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु से मुत्तफ़क़ अलैह हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः **فَإِنَّ خَيْرَ صَلَاةِ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ**

''फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा, इंसान की बेहतर नमाज़ घर की है, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 6113, मुस्लिम 781)

नमाज़े वित्र

मुसलमानों के लिए वित्र की नमाज़ अदा करना मसनून है। यह सुन्नते मुअक्किदा है और इसका वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से तुलू.ए फज्र तक है और जो जाग सकता हो, उसके लिए बेहतर वक़्त, रात का आख़िरी हिस्सा है।

यह उन सुन्नतों में से है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी नहीं छोड़ा बल्कि हमेशा सफ़र में हो या हज़र में, उसे अदा करते रहे,

वित्र की सबसे कम संख्या एक रकअत है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें पढ़ा करते थे जैसा कि उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है कि

أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، يُوتِرُ مِنْهَا بِوَاحِدَةٍ

अल्लाह के रसूल ;सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें अदा करते थे। उनमें एक रकअत वित्र की होती थी (सही मुस्लिम 736)

रात की नमाज़ें दो दो रकअतें करके पढ़ी जाती हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम से रात की नमाज़ के बारे में पूछा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى، فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمُ الصُّبْحَ، صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً تُوتِرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى

''रात की नमाज़ दो–दो रकअतों में पढ़ी जाती है। जब तुम में से कोई सुबह होने से डरे तो एक रकअत पढ़ ले, जो कुछ पढ़ा होगा, उनके लिए यह वित्र हो जायेगी, (सही मुस्लिम 749)

वित्र में कभी रुकूअ के बाद दुआए–कुनूत पढ़ना मुस्तहब है, क्योंकि हसन बिन अली रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कुछ कलिमे सिखाए और कहा कि उन्हें वित्र में पढ़ा करो, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है। क्योंकि अकसर सहाबियों ने जिन्होंने वित्र के बारे में उल्लेख किया है, उन्होंने आपके कुनूत का उल्लेख नहीं किया है।

उसी तरह जिसकी रात की नमाज़ें छूट गयी हों, उसके लिए मुस्तहब है कि वह दिन में उनका क़ज़ा करे। वह दो रकअत, चार, छे, आठ, दस या बारह रकअतें करके पढ़ ले क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया है।

फ़ज्र की दो रकअतें

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन सुन्नतों को सफ़र या हज़र, किसी हालत में नहीं छोड़ा करते थे, उनमें फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत भी शामिल है।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है:

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ عَلَى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ أَشَدَّ مُعَاهَدَةً مِنْهُ عَلَى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ

यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफ़्ल नमाज़ों में सुबह से पहले दो रकअत सुन्नत से ज़्यादा किसी दूसरी नफ़्ल नमाज़ पर ज़ोर नहीं देते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 1163, मुस्लिम 724)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हीं दो रकअतों के बारे में फ़रमाया है: ''मेरी नज़र में वे दोनों, तमाम दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं, (सही मुस्लिम 725)

मसनून यह है कि इंसान पहली रकअत में सूरह **काफिरून** और दूसरी रकअत में सूरह **इख़लास** की तिलावत करे। और कभी पहली रकअत में ''**कूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उनज़िल इलैना** और दूसरी रकअत में ''**कुल या अहलल किताबि तआ़लौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना व बैनकुम,** की तिलावत करे।

इसी तरह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल की वजह से इन दोनों रकअतों को हलकी पढ़ना मसनून है। जो इंसान इन दोनों रकअत को फ़ज्र से पहले न पढ़ सका हो, उसके हक़ में मसनून है कि वह फ़ज्र की नमाज़ के बाद कज़ा कर ले। अलबत्ता सूरज उगने के बाद और सूरज के एक नेज़ा ऊपर उठने के बाद ज़वाले

आफ़ताब तक इन दोनों रकअतों का क़ज़ा करना ज़्यादा बेहतर हैं।

चाश्त की नमाज़

चाश्त की नमाज़ को सलाते अव्वाबीन भी कहते हैं। यह सुन्नते मुवक्किदा है और उसके लिए बेशुमार हदीसें आयी हैं। अबूज़र रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

يُصْبِحُ عَلَى كُلِّ سُلَامَى مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ، فَكُلُّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ، وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ، وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَيُجْزِئُ مِنْ ذَلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحَى

''तुम में से हर व्यक्ति के ज़िम्मे, उसके शरीर के तमाम जोड़ों की तरफ़ से सदक़ा वाजिब है। अतएव **सुब्हानल्लाह** कहना सदक़ा है। **अल्हम्दुलिल्लाह** कहना सदक़ा है। **लाइलाह इल्लल्लाह** कहना सदक़ा है। **अल्लाहु अकबर** कहना सदक़ा है। भलाई का हुक्म देना सदक़ा है। बुराई से रोकना सदक़ा है। और चाश्त के वक़्त की दो रकअतें इन सब की अदायगी के लिए काफ़ी हैं, (सही मुस्लिम 720)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

أَوْصَانِي خَلِيلِي بِثَلَاثٍ لَا أَدَعُهُنَّ حَتَّى أَمُوتَ: «صَوْمِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَصَلَاةِ الضُّحَى، وَنَوْمٍ عَلَى وِتْرٍ

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की नसीहत फ़रमायी है और मुझे ताकीद की है कि मैं

उन्हें मरते दम तक न छोड़ूं पहली बात यह है कि मैं हर महीने के तीन दिनों का रोजा रखूं। दूसरी बात यह है कि मैं चाश्त की नमाज़ का एहतिमाम करुं और तीसरी बात यह है कि मैं वित्र पढ़ने से पहले न सोऊं (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 1178, मुस्लिम 721)

चाश्त की नमाज़ का अफ़ज़लतरीन वक़्त यह है जब दिन बुलन्द हो, और धूप तेज़ हो जाए, और ज़वाले आफताब के साथ उसका वक़्त खत्म हो जाता है। यह कम से कम दो रकअतें मसनून हैं और ज़्यादा की कोई सीमा नहीं है।

जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मना है

कुछ वक़्त ऐसे हैं जिन में नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है,

1. फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज उगने और उसके एक नेज़ा ऊंचा होने तक।

2. दोपहर के समय जब सूरज सर पर आ जाता है और उसका पता इससे चलता है कि साया रुक जाता है। यहां तक कि सूरज पश्चिम की ओर झुक जाए।

3. अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक।

अलबत्ता इन औक़ात में कुछ नमाज़ें अदा की जा सकती हैं। जैसे तहैयतुल मस्जिद, नमाज़े जनाज़ा, नमाज़े ग्रहन, तवाफ़ की दो रकअतें, और वुज़ू के बाद की दो रकअतें आदि।

इसी तरह इन औक़ात में छूटी हुई फर्ज़ नमाज़ों को भी पढ़ा जा सकता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

مَنْ نَسِيَ صَلَاةً، أَوْ نَامَ عَنْهَا، فَكَفَّارَتُهَا أَنْ يُصَلِّيَهَا إِذَا ذَكَرَهَا

जो किसी नमाज़ को भूल गया हो, या उसे नींद आ गयी हो, जब उसे याद आए, तभी उसे पढ़ लेगा, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 597, मुस्लिम 684)

इसी तरह फ़ज्र की सुन्नत के क़ज़ा का मसला है। इसी तरह जुहर की सुन्नत को जो वक़्त पर न पढ़ सका हो, उसके लिए उसे अस्र के बाद क़ज़ा करना जायज़ है

विषय सूचि

नापाकी का बयान	3
नजासत की क़िस्में	4
नजासत के तअल्लुक़ से कुछ अहकामात	5
शौच की आवश्यक्ता	6
वुज़ू का बयान, वुज़ू का तरीका	7, 8
मोज़े पर मसह	9
वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें, स्नान या नहाना	11,11
नापाक होने के बाद कौन कौन सी चीजें हराम हैं	12
तयम्मुम, तयम्मुम का तरीक़ा	12, 13
माहवारी और नफ़ास	14
नमाज़ के अहकाम	15
नमाज़ से संबंधित अहम अहकाम	18
नमाज़ का समय	21
ऐसी जगहें जहां नमाज़ सही नहीं होतीं	21

नमाज़ की कैफ़ियत	22
नमाज़ के बाद की दुआएं	28
नमाज़ को बातिल कर देने वाली चीज़ें	30
जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं	30
नमाज़ के अरकान	31
सहव का बयान	32
सुनन रवातिब	33
नमाज़े वित्र	34
फ़ज्र की दो रकअतें	36
चाश्त की नमाज़	38
जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मना है	39